

Padma Shri



SHRI S. SUBBARAMAN

Shri S. Subbaraman, former Superintending Archaeological Chemist of the Archaeological Survey of India, has rendered distinguished service in the field of Heritage Conservation.

2. Born on 24th December, 1929, Shri Subbaraman received a First Class B.Sc. Honours degree in Chemistry (equivalent to Masters degree) from the Madras University in 1951. After a brief stint in the Madras State government, he joined the Archaeological Survey of India (Chemistry Branch) in 1954 and was posted at Ajanta in February 1955, where he worked on the conservation of the iconic Ajanta murals. In 1958, he was transferred to Lepakshi, where he tackled the challenging conservation problems of the Vijayanagara period murals in the temple there, very successfully.

3. Shri Subbaraman was awarded an Italian Government scholarship and proceeded to Rome in 1960 for higher training in the Restoration of Works of Art. After return, he worked on the conservation of the famous Hoysala temples of Belur and Halebid in Karnataka.

4. Shri Subbaraman was deputed to the Indian Museum, Calcutta, in May 1966, and set up the Conservation Laboratory of the Museum, carrying out and supervising the conservation of a large number of museum objects of different kinds. Returning to A.S.I. in May 1975, he took charge as Deputy Superintending Archaeological Chemist and Head of the Southern Region of the Chemistry Branch at Hyderabad, holding responsibility for the conservation of monuments in the four southern states, besides Maharashtra and Gujarat, including Ajanta and Ellora. He retired from A.S.I. on December 31, 1987. Among his notable achievements during this period is the successful separation of two layers of old mural paintings, one superimposed over the other, and preserving them both in the Brihadeeshwara temple, Thanjavur. They were the Chola paintings of the 11th century and the 16th century Nayaka paintings superimposed on the former. This was the first time anywhere in the world that such a feat had been accomplished and the work attracted international attention. The Australian Broadcasting Corporation sent a team to film this process in 1986 and this was telecast in their programme 'Beyond 2000'.

5. Shri Subbaraman was the team leader in 1977, when the work on the gigantic Buddha statues in Bamiyan was completed by A.S.I. in 1977 and the monument formally handed over to the Afghan Government. He was part of the A.S.I. team to Angkor Wat, Cambodia in 1982 and prepared the Chemical conservation part of the project report. He also led the team that carried out the conservation of the churches of Old Goa and the large number of artifacts in them in 1983.

6. Shri Subbaraman has attended national and international conferences and presented papers, besides publishing research articles in reputed journals, including 'Current Science', including a State of the Art report for the Department of Science and Technology, Government of India on 'Conservation of wall paintings'.

7. Shri Subbaraman was honoured by the Honble Governor of Karnataka in 2011, along with other distinguished Archaeologists.



श्री एस. सुब्बरामन

श्री एस. सुब्बरामन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पूर्व अधीक्षण पुरातात्विक रसायनज्ञ हैं जिन्होंने विरासत संरक्षण के क्षेत्र में विशिष्ट सेवा कार्य किया है।

2. 24 दिसंबर, 1929 को जन्मे, श्री सुब्बरामन ने 1951 में मद्रास विश्वविद्यालय से रसायन विज्ञान में प्रथम श्रेणी में बी. एससी ऑनर्स की डिग्री (स्नातकोत्तर डिग्री के समकक्ष) प्राप्त की। मद्रास राज्य सरकार में थोड़े समय तक नौकरी करने के बाद, वह 1954 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (रसायन विज्ञान शाखा) में शामिल हो गए। वह फरवरी 1955 में अजंता में नियुक्त हुए, जहां उन्होंने प्रतिष्ठित अजंता भित्ति चित्रों के संरक्षण पर काम किया। 1958 में, उन्हें लेपाक्षी स्थानांतरित कर दिया गया, जहां उन्होंने विजयनगर काल के मंदिर के भित्ति चित्रों का सफलतापूर्वक संरक्षण किया।

3. श्री सुब्बरामन को इतालवी सरकार की छात्रवृत्ति प्रदान की गई और वह कलाकृतियों के पुनरुद्धार में उच्च प्रशिक्षण के लिए 1960 में रोम चले गए। लौटने के बाद, उन्होंने कर्नाटक में बेलूर और हलेबिड के प्रसिद्ध होयसल मंदिरों का संरक्षण कार्य किया।

4. श्री सुब्बरामन को मई, 1966 में भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता में प्रतिनियुक्त किया गया था, जहां उन्होंने संग्रहालय की संरक्षण प्रयोगशाला की स्थापना की, जो संग्रहालय की बहुत सारी विभिन्न वस्तुओं का संरक्षण और पर्यवेक्षण करती थी। मई 1975 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में वापस आकर, उन्होंने हैदराबाद में रसायन विज्ञान शाखा के उप अधीक्षण पुरातात्विक रसायनज्ञ और दक्षिणी क्षेत्र के प्रमुख के रूप में कार्यभार संभाला, तथा अजंता और एलोरा सहित महाराष्ट्र और गुजरात के अलावा चार दक्षिणी राज्यों के स्मारकों के संरक्षण का दायित्व संभाला। वह 31 दिसंबर, 1987 को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण से सेवानिवृत्त हुए। उनके कार्यकाल की उल्लेखनीय उपलब्धियों में एक, बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर के पुराने भित्ति चित्रों की दो परतों को सफलतापूर्वक अलग करना, एक को दूसरे पर अध्यारोपित (superimposed) करके संरक्षित करना था। ये 11वीं शताब्दी के चोलकाल के चित्र और 16वीं शताब्दी के नायककाल के चित्र थे, जिनमें से चोलकालीन चित्रों को नायककालीन चित्रों पर अध्यारोपित किया गया था। विश्व में पहली बार ऐसी असाधारण उपलब्धि हासिल की गई थी और इसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित किया। ऑस्ट्रेलियन ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन ने 1986 में इस प्रक्रिया को फिल्माने के लिए एक टीम भेजी और इसे अपने कार्यक्रम 'बियॉन्ड 2000' में प्रसारित किया।

5. श्री सुब्बरामन 1977 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की उस टीम के प्रमुख थे जिसने 1977 में बामियान में विराट बुद्ध प्रतिमाओं पर अपना कार्य पूरा किया गया था और स्मारक को औपचारिक रूप से अफगान सरकार को सौंपा था। वह 1982 में अंकोरवाट, कंबोडिया गई भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की उस टीम का हिस्सा थे, जिसने परियोजना रिपोर्ट का रासायनिक संरक्षण से संबंधित हिस्सा तैयार किया था। उन्होंने 1983 में ओल्ड गोवा के चर्चों और उनकी बहुत सारी कलाकृतियों का संरक्षण करने वाली टीम का भी नेतृत्व किया।

6. श्री सुब्बरामन ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया है और पेपर प्रस्तुत किए हैं। इसके अलावा 'करंट साइंस' सहित प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में उनके शोध लेख प्रकाशित हुए हैं और इनमें 'भित्ति चित्रों के संरक्षण' पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के लिए एक अत्याधुनिक रिपोर्ट भी शामिल है।

7. श्री सुब्बरामन को 2011 में कर्नाटक के माननीय राज्यपाल द्वारा अन्य प्रतिष्ठित पुरातत्वविदों के साथ सम्मानित किया गया था।